ये लगना भी कैसा होता है न

जो कोई कहे अच्छी लगती है तू

तो ज़ोर से बुरा लगता

खराब हो जाता मन

कोई कहे

तुम्हारी आंखे भीतर तक बेधती है

तो अपनी ही आंखों पर आता गुस्सा

कोई जो बढ़ बढ़ के करे मैसेज

तो मोबाइल से ही जान लेने का जी चाहता

और फिर

यही सब सुनने की ख़ाहिश

उस एक से

जो कभी कुछ नहीं कहता

ये तक नहीं कि अच्छी लगती हो तुम

रंग, आंखें, खुशबू, तितली तो छोड़ दो

वो जो आंख भर देखता भी नहीं

मन भर बैठता भी नहीं

ख़ाहिश भर बात भी न करता चाह वाली

मन को उसका न कहा भी अच्छा लगता

कह दे तो जानें क्या हो

ये लगना भी कैसा होता है न...